शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 9
Issue 1
15 January, 2018

भारतीय विश्वविद्यालयों के शैक्षणिक स्तर का प्राथमिक और उच्चतर प्राथमिक शिक्षा से अन्त:सम्बन्ध

बीज शब्द :

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, तर्कपूर्ण शिक्षा, अन्त:सम्बन्ध, आधुनिक प्रविधियाँ, शैक्षिक अभिरुचि, शैक्षिक परामर्श, वांछित लक्ष्य।

भारतीय विश्वविद्यालयों के शैक्षणिक स्तर को वैश्विक स्तर पर लाने के लिये प्राथमिक और उच्चतर प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारना आवश्यक है; क्योंकि, प्राथमिक और प्राथमिक उच्चतर शिक्षा की गुणवत्ता उच्च शिक्षा की गुणवत्ता का आधार है। प्राथमिक शिक्षा जितनी उच्च कोटि की होगी, उतनी ही अधिक उच्च कोटि की उच्च शिक्षा होगी। गुणवत्तापूर्ण और तर्कपूर्ण शिक्षा के प्रचार और प्रसार के लिये शिक्षा समितियों, अध्यापकों और अविभावकों में कर्तव्यनिष्ठता का बोध विद्यमान होना अत्यावश्यक है। भारत में ऐसी शिक्षा प्रणाली के विकास की आवश्यकता है; जिस के माध्यम से, व्यक्ति की विश्लेषण ात्मक दृष्टि, कल्पनाशक्ति, तर्कपूर्ण विचारों इत्यादि का विकास और 'मनस्' का परिमार्जन सम्भव हो तथा समाज के साथ तारतम्य स्थापित होना सम्भव हो। विकसित शिक्षा प्रणाली, और नागरिकों के पारस्परिक तारतम्य से भारतीय विश्वविद्यालयों के शैक्षणिक स्तर को वैश्विक स्तर पर लाने का प्रयास किये जाने की परम आवश्यकता है।

*****

ओमपाल सिंह (शोध छात्र),
डा० हेमेन्द्र सिंह
समाजशास्त्र विभाग,
के०जी०के० महाविद्यालय (स्नातकोत्तर),
मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत
E-mail: ompalsinghmit@gmail.com

भारतीय विश्वविद्यालयों के शैक्षणिक स्तर का प्राथमिक और उच्चतर प्राथमिक शिक्षा से अन्त:सम्बन्ध

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उन विषयों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है जिन के कारण उच्च शिक्षा के स्तर पर भारत विश्व के अधिकांश देशों से बहुत पीछे है। 'टाइम्स हायर एजुकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2016-2018 की सूची के अनुसार विश्व के 200 विश्वविद्यालयों में कोई भी भारतीय विश्वविद्यालय उच्च गुणवत्ता के मानकों को पूर्ण नहीं करने के कारण सम्मिलित नहीं किया गया है; जब कि, 400 विश्वविद्यालयों की सूची में केवल 02 भारतीय विश्वविद्यालय सम्मिलित किये गये हैं। इस समस्या के विषय को 'भारतीय विश्वविद्यालयों के शैक्षणिक स्तर का प्राथमिक और उच्चतर प्राथमिक शिक्षा से अन्त:सम्बन्ध' शीर्षक के अन्तर्गत प्रस्तुत किया गया है।

शोध उद्देश्य -

इस अध्ययन का उद्देश्य प्राथमिक शिक्षा और उच्चतर प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों की शैक्षणिक समस्याओं को ज्ञात करना है तथा उन के साथ भारतीय उच्च शिक्षा के अन्त:सम्बन्ध को ज्ञात करना है। इस हेतु निम्नलिखित बिन्दु निर्धारित किये गए हैं -

1. समाज के निर्धन बच्चों की समस्याएँ
2. वर्तमान समय में प्राथमिक और उच्चतर प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा से सम्बन्धित समस्याओं को ज्ञात करना
3. प्राथमिक और उच्चतर प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों से सम्बन्धित समस्याओं को ज्ञात करना
4. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में बाधक कारकों को ज्ञात करना

शोध परिकल्पना -

'उच्च शिक्षा की गुणवत्ता प्राथमिक और उच्चतर प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर होती है।'

अध्ययन के स्रोत - इस अध्ययन में छ: प्रकार के द्वितीयक तथ्यों का उपयोग किया गया है; जिन में, जर्नल में प्रकाशित शिक्षा से सम्बन्धित शोध पत्र, शोध-प्रबन्ध की रूपरेखा, प्रतिवेदन, इलेक्ट्रॉनिक माध्यम, इलेक्ट्रॉनिक समाचार पत्र और मुद्रित समाचार पत्र सम्मिलित हैं।

शोध की पद्धति -

यह अध्ययन आनुभवात्मक है। शोध को पूर्णत: नियन्त्रित और वस्तुनिष्ठ बनाने के उद्देश्य से इस अध्ययन में विवरणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है, जिस से कि इस अध्ययन द्वारा वर्तमान शैक्षणिक स्थिति का स्पष्टीकरण सरल हो सकेगा और वृहद अध्ययन में सहायता भी प्राप्त होगी।

शिक्षा का परिचय -

साधारण शब्दों में, जिस अथवा जिन तत्थ्यों को सीख कर किसी व्यक्ति की भौतिक सम्पन्नता में वृद्धि होती है, वह शिक्षा है; उदाहरणत: - लिपिक, कार्यालय अधीक्षक, अभियन्ता इत्यादि के पदभार से सम्बन्धित आर्थिक पक्ष। इस प्रकार, लिपिक, कार्यालय अधीक्षक, अभियन्ता इत्यादि व्यावसायिक पद हैं, जिन से धन का अभिप्राय: सम्बद्ध है और धन से ही किसी व्यक्ति की भौतिक सम्पन्नता में वृद्धि होती है।

परन्तु, शिक्षा का समाजशास्त्रीय अर्थ अत्यन्त व्यापक है जिस के अनुसार जिस के माध्यम से व्यक्ति की विश्लेषणात्मक दृष्टि, कल्पनाशक्ति, तर्कपूर्ण विचारों इत्यादि का विकास हो, वह शिक्षा है। इस प्रकार, जिस के माध्यम से व्यक्ति के 'मनस्' का परिमार्जन और विकास होता है, वह शिक्षा है।

शिक्षा के माध्यम से ही सब कुछ प्राप्य है; यहाँ तक कि श्रान्ति की खोज के नवीन आधारों की खोज करने की आवश्यकता भी शेष नहीं रहती है।

परन्तु, गुणवत्तापूर्ण और तर्कपूर्ण 'शिक्षा' ही घटनाओं का मौलिक अध्ययन करने में सहायता प्रदान करती है और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को सुगम बनाती है। समस्त प्रकार की घटनाएँ, जैसे- आपराधिक, सांस्कृतिक, भौगालिक इत्याादि घटनाएँ, समाज में ही घटती हैं और इन घटनाओं का विश्लेषण कोई ऐसा शिक्षित व्यक्ति ही कर सकता है; जिसे, अधिक से अधिक सूचनाएँ (जानकारियाँ) प्राप्त हों। वह अपनी विश्लेषणात्मक दृष्टि और तर्कपूर्ण शिक्षा' के माध्यम से इन घटनाओं का विश्लेषण ठीक ढंग से करके समाज को लाभ पहुँचा सकता है और ऐसा व्यक्तित्व सम्पूर्ण मानव समाज के लिये सदैव हितकारी होता है।

निरक्षर व्यक्ति शिक्षा को केवल मौखिक रूप से ही समझ सकता है; जब कि, शिक्षित व्यक्ति मौखिक और लिखित दोनों रूपों से समाज के विभिन्न तत्त्वों को समझने में समर्थ होता है।

निरक्षर व्यक्ति समाज की विभिन्न संस्थाओं के तत्त्वों का अक्षरश: पालन करता है; क्योंकि, वह उन के सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों का विश्लेषण नहीं करता है; जब कि, शिक्षित व्यक्ति समाज में उन तत्त्वों का विश्लेषण करके प्राय: सकारात्मक पक्षों का प्रसार करता है। शिक्षित व्यक्ति देश की ही नहीं वरन, विश्व की सामाजिक, राजनैतिक इत्यादि दशाओं और समस्याओं का सरलता से बोध ग्रहण करता है और अपनी विभित्र

प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करके समाज का परिमार्जन करता है।

गुणवत्तापूर्ण और तर्कपूर्ण शिक्षा से सम्बन्धित समस्याएँ -

१. निर्धन बच्चों से सम्बन्धित समस्याएँ - निर्धन परिवारों के बच्चों को निर्धन बच्चे कहा जाता है।

- **समय** :- ऐसे परिवारों के बच्चे दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अपने माता, पिता अथवा अविभावक का अनेक कार्यों में अपना योगदान देते हैं, जिस के कारण, उन के लिये शिक्षा हेतु समय शेष नहीं रहता है और वे आवश्यक अध्ययन से वंचित रह जाते हैं। शोधकर्ती श्रीमति मीना सक्सेना ने अपने शोध-प्रबन्ध की रूपरेखा 'नगरीय परिवेश में कामगार बच्चों की समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन' में नगरीय परिवेश में रहने वाले कामगार बच्चों की समस्याओं का उल्लेख करते हुए लिखा है कि निर्धन परिवारों के बच्चे मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये धन प्राप्ति के लिये अपने माता-पिता अथवा अविभावक के कार्यों में अपना योगदान देते हैं, जिस के कारण, उन के पास शिक्षा के लिये समय शेष नहीं रहता है। इस ही प्रकार, जुलाई 10, 2018 को प्रकाशित दैनिक जागरण, मुरादाबाद सिटी के संस्करण के पृष्ठ संख्या -07 के शीर्षक ''पढ़ने-लिखने की उम्र में बाल मजदूरी'' के समाचार के अनुसार - बच्चे आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये 'रिक्शा' खींचने के लिये विवश हैं।
- **अविभावक की हस्त-कौशल के प्रति रुचि** :- शोधकर्ती श्रीमति मीना सक्सेना ने अपने शोध-प्रबन्ध की रूपरेखा ''नगरीय परिवेश में कामगार बच्चों की समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन' में नगरीय परिवेश में रहने वाले कामगार बच्चों की समस्याओं का उल्लेख करते हुए लिखा है कि निर्धन व्यक्तियों के बच्चे निर्धनता के कारण शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। निर्धन परिवारों के कुछ बच्चे माता, पिता अथवा अविभावक की शिक्षा के प्रति अरुचि के कारण आवश्यक गुणवत्तापूर्ण और तर्कपूर्ण अध्ययन करने में असमर्थ रहते हैं। ऐसे माता, पिता अथवा अविभावक प्राय: बच्चे को धनार्जन हेतु हस्त-कौशल के लिये प्रेरित करते हैं। इस माध्यम से उस परिवार को बच्चे के द्वारा आर्थिक सहायता उस के बचपन से ही प्राप्त होने लगती है। इस ही कारण, अविभावकों के मनस् में यह भाव स्थायी हो जाता है कि - 'शिक्षा निरर्थक है।'
- **कुपोषण** :- 'इलेक्ट्रॉनिक बेव साइट' ''विकिपीडिया'' के अनुसार - निर्धन परिवारों के बच्चे प्राय: कुपोषित होते हैं; जिस के परिणामस्वरूप, ये बच्चे मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं होते हैं और वे अस्वस्थता के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करके भी वैश्विक मानकों के स्तर के गुणवत्तापूर्ण और तर्कपूर्ण अध्ययन करने में असमर्थ रहते हैं।
- **शिक्षा हेतु अपूर्ण छात्रवृत्ति** -जून 22, 2017, दैनिक जागरण, मुरादाबाद सिटी संस्करण के पृष्ठ संख्या - 09 पर प्रकाशित शीर्षक ''मदरसा छात्रों के खातों में पहुँचेगा वजीफा'' के समाचार के अनुसार प्रशासनिक की कर्तव्य-विमूढ़ता और भ्रष्टाचार के कारण पंजीकृत 'मदरसा' विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्राप्त नहीं हुई। निर्धन परिवारों के कुछ बच्चे बौद्धिक और शारीरिक रूप से शिक्षाप्राप्ति हेतु सक्षम होते हैं; परन्तु, धनाभाव के कारण वे शिक्षा से वंचित रह जाते हैं और भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रदत्त छात्रवृत्ति इतनी नहीं होती है कि वे अपनी दैनिक शारीरिक और शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित कर सकें। मैरी लाल ने भी अपने प्रतिवेदन 'भारतीय शिक्षा-प्रणाली, 2005' में शिक्षा हेतु अपर्याप्त छात्रवृत्ति का उल्लेख किया है।

2. **प्राथमिक शिक्षा और उच्चतर प्राथमिक शिक्षा विद्यालयों से सम्बन्धित समस्याएँ** -

- **शिक्षकों का अवकाश** - इलेक्ट्रॉनिक बेव साइट ''विकिपीडिया'' के अनुसार - शिक्षकों द्वारा अनावश्यक रूप से अवकाश पर रहने के कारण विद्यार्थियों की शिक्षा बाधित होती है और इस से शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित होती है; क्योंकि अवकाश पर रहने के कारण वे निर्धारित पाठ्यक्रम को कक्षा में पूर्ण करने में असमर्थ रहते हैं। परिणामस्वरूप, विद्यार्थी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं।
- **आधुनिक प्रविधियाँ** - अल्टियस ब्लॉग में प्रकाशित लेख 'शिक्षा में समस्याएँ, 2011' और मैरी लाल के प्रतिवेदन 'भारतीय शिक्षा-प्रणाली, 2005' के अनुसार - विशेषत: विज्ञान क्षेत्र की आधुनिक प्रविधियाँ पूर्वकालिक प्रविधियों से अधिक गुणवत्तापूर्ण परिणाम देती हैं; परन्तु, अधिकांश भारतीय विद्यालयों में इन को अनुदान राशि की अल्पता आदि अनेक कारणों से प्रभावी नहीं किया जा सका है; जिस के कारण, विद्यार्थियों को आधुनिक विश्व की आवश्यकतानुसार शिक्षा प्राप्त नहीं हो रही है।
- **विद्यालय में शिक्षण से अरुचि** - इलेक्ट्रॉनिक समाचार पत्र Online Indore ने August 01, 2015, 09:50:00 PM (IST) को शीर्षक ''टयूशन पढ़ाते पकड़ा गया सरकारी शिक्षक,

क्लास में मिले 50 बच्चे' के अन्तर्गत समाचार प्रकाशित किया है कि अनेक शिक्षक अपने नैतिक और सामाजिक कर्तव्यों से विमुख हो कर अतिरिक्त आय के लिये बच्चों को 'ट्यूशन' के लिये बाध्य करते हैं; जिस से, अविभावकों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ पड़ता है। ऐसे शिक्षक प्राय: गुणवत्तापूर्ण शिक्षण की उपेक्षा करते हुए परीक्षा से सम्बन्धित निर्धारित पाठ्यक्रम को कण्ठस्थ कराने पर ही अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं और शिक्षा की गुणवत्ता पर ध्यान नहीं देते हैं।

• **शैक्षिक अभिरुचि** :- इलेक्ट्रॉनिक बेव साइट' ''विकिपीडिया'' के अनुसार - विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिरुचि जागृत करने का उत्तरदायित्व शिक्षक और अविभावक दोनों पर है और इन में भी तुलनात्मक दृष्टि से सब से अधिक उत्तरदायित्व शिक्षकों पर है; क्योंकि, यह आवश्यक नहीं है कि समस्त अविभावक शिक्षा की महत्ता को समझते ही हों, परन्तु, शिक्षकों से अपेक्षित है कि वे शिक्षा की महत्ता को अवश्य ही समझते होंगे। भारत की स्वतन्त्रता के समय सेवारत शिक्षक देशभक्ति की भावना से औतप्रोत थे और इस ही कारण उन्होंने देशहित में अपने स्तर से शैक्षणिक दृष्टिकोण से बच्चों में शैक्षिक अभिरुचि जागृत करने का प्रयास किया; परन्तु, वर्तमान में शिक्षक बच्चों में शैक्षिक अभिरुचि जागृत करने का उत्तरदायित्व प्राय: भूल गए हैं।

• **शैक्षिक परामर्श** :- इलेक्ट्रॉनिक बेव साइट 'विकिपीडिया' के अनुसार - वर्तमान में प्राय: सरकारी विद्यालयों में अविभावकों और बच्चों को शैक्षिक परामर्श नहीं दिया जाता है; जब कि, निजी शैक्षणिक संस्थानों में बच्चों की प्रवेश-संख्या में वृद्धि के उद्देश्य से अविभावकों और बच्चों को शैक्षिक परामर्श दिया जाता है। सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों को बच्चों की प्रवेश-संख्या में वृद्धि से कोई सम्बन्ध नहीं है; क्योंकि, अविभावकों और बच्चों को शैक्षिक परामर्श नहीं देने पर उन के वेतन और 'वार्षिक गोपनीय सूचना' पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

• **पुस्तकालय, प्रयोगशाला, संसाधन और उचित संख्या में भवनों का अभाव** :- डा॰ सुहास के शोध पत्र 'अधिक मुद्दों और चुनौतियों के होने पर शिक्षा' के अनुसार- प्राय: सरकारी विद्यालयों में यह देखने में आया है कि राजनैतिक कारणों से सरकार और प्रशासन द्वारा पुस्तकालय, प्रयोगशाला, संसाधन और भवनों के रखरखाव तथा विस्तार हेतु आवश्यक धनराशि का आवण्टन नहीं किया जाता है। यदि सरकार और प्रशासन द्वारा आर्थिक सहायता प्रदान की भी जाती है तो उस को विद्यालयों की समितियाँ स्वयम के लाभ हेतु व्यय कर लेती हैं; जिस के कारण, विद्यार्थियों को सरकार और प्रशासन द्वारा प्रदत्त आर्थिक सहायता का आवश्यक और उचित लाभ नहीं मिलता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु उचित संख्या में पुस्तकालय, प्रयोगशाला, संसाधन और भवनों का होना अत्यावश्यक है।

3. **गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के मानदण्ड** -

• **भाषा** :- अल्टियस ब्लॉग में प्रकाशित लेख 'शिक्षा में समस्याएँ, 2011' के अनुसार - शिक्षा अथवा तत्थ्यों को समझने के लिये भाषा में पारंगत होना आवश्यक है। यह अनुभव किया गया है कि जो व्यक्ति भाषा में पारंगत नहीं होता है; वह तत्थ्यों को समझने में समर्थ नहीं होता है; अत:, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु शिक्षा से सम्बन्धित समस्त व्यक्तियों को भाषा में पारंगत होना आवश्यक है।

• **शैक्षिक अभिरुचि** :- इलेक्ट्रॉनिक बेव साइट' ''विकिपीडिया'' के अनुसार - गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को प्राप्त करने अथवा प्रदान करने के लिये दोनों पक्षों में शैक्षिक अभिरुचि का होना अत्यावश्यक है; क्योंकि, शैक्षिक अभिरुचि के अभाव में केवल औपचारिकताएँ ही शेष रहती हैं।

• **ज्ञान के परिमार्जन की महत्वाकांक्षा** :- इलेक्ट्रॉनिक बेव साइट ''विकिपीडिया'' के अनुसार - गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को प्राप्त करने अथवा प्रदान करने हेतु दोनों पक्षों में ज्ञान के परिमार्जन की महत्वाकांक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है; क्योंकि, इस ही के कारण सीखने की अभिरुचि उत्पन्न होती है।

• **आवश्यक प्रयोगशालाएँ और संसाधन** :- अल्टियस ब्लॉग में प्रकाशित लेख 'शिक्षा में समस्याएँ, 2011' और मैरी लाल के प्रतिवेदन 'भारतीय शिक्षा-प्रणाली, 2005' के अनुसार - गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की प्रतिपूर्ति और स्वयम अनुभव कराने के उद्देश्य से सम्भव प्रयोगशालाएँ और उचित संसाधनों का होना आवश्यक होता है।

• **भावी स्तर की शिक्षा को समझने की आधार शिक्षा** :- अल्टियस ब्लॉग में प्रकाशित लेख 'शिक्षा में समस्याएँ, 2011' के अनुसार - गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को प्राप्त करने अथवा प्रदान करने हेतु आधार शिक्षा का होना अत्यावश्यक है; क्योंकि, उस के अभाव में भावी शिक्षा को समझने में कठिनाई अनुभव होने की सम्भावना प्रबल होती है।

4. **गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से सम्बन्धित समस्याएँ**

• **गहन लेखन का अभाव** - अल्टियस ब्लॉग में प्रकाशित लेख 'शिक्षा में समस्याएँ, 2011' के अनुसार - वास्तव में, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का आधार प्राथमिक शिक्षा पर आधारित होता

है; क्योंकि, वहीं पर किसी विद्यार्थी की व्याकरणीय और शुद्ध वार्तनिक भाषा का सूत्रपात होता है और यह सत्य है कि भाषा के अभाव में सदैव ज्ञातव्यों की प्राप्ति में कठिनाई होती है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की प्राप्ति हेतु समाज के विद्वानों से विद्वतापूर्ण लेखन की अपेक्षा होती है; परन्तु, पाया यह गया है कि भारत में सार्थक और भाषागत साहित्य का सदैव अभाव रहा है। इस ही कारण, विद्यार्थियों के लिये आवश्यक द्वैतीयक तत्थ्यों का सदैव अभाव रहता है और उन में आवश्यक ज्ञातव्यों के अभाव में असमंजस की स्थिति उत्पन्न होती रहती है।

• **व्याकरण का अशुद्ध ज्ञान** – अल्टियस ब्लॉग में प्रकाशित लेख 'शिक्षा में समस्याएँ, 2011' के अनुसार – वास्तव में ही, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही व्याकरणीय नियमों को सीखने का एकमात्र आधार है। लेखन व्याकरणीय दृष्टिकोण से जितना अधिक समृद्ध होता है; उतना ही अधिक, उस लेखन में वर्णित तत्थ्य सत्यता के निकट और स्पष्ट होते हैं। व्याकरणीय रूप से अशुद्ध लेखन 'अर्थ का अनर्थ' करता है। इस ही कारण, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त व्यक्ति ही व्याकरणीय नियमों के आधार पर लेखन करता है; जिस के कारण, उस के लेखन का ठीक वही अर्थ होता है, जो लेखक प्रगट करना चाहता है। इस ही कारण, व्याकरणीय नियमों के अभाव में उच्च शिक्षाप्राप्त व्यक्ति भी सार्थक और भाषागत साहित्य के लेखन में असफल रहता है और समाज के लिये अभिशाप बन जाता है। इस ही कारण, विशेष रूप से हिन्दी पुस्तकों में गहन लेखन का अभाव है और उन में अव्याकरणीय नियमों और अशुद्ध वार्तनिक शब्दों की प्रचुरता है।

• **भाषा की शैली का ज्ञान** – अल्टियस ब्लॉग में प्रकाशित लेख 'शिक्षा में समस्याएँ, 2011' के अनुसार – विशेष रूप से हिन्दी पुस्तकों में भाषा शैली का अभाव पाया जाता है। यदि उत्कृष्ट लेखकों को छोड़ दिया जाए, तो, अधिकतम पुस्तकों में शैक्षिक स्तर के अनुसार आवश्यक भाषा शैली का अभाव पाया जाता है।

• **भाषा में अस्पष्टता** – अल्टियस ब्लॉग में प्रकाशित लेख 'शिक्षा में समस्याएँ, 2011' के अनुसार – गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के अभाव में ऐसे शिक्षक की नियुक्ति शिक्षा क्षेत्र में उत्तरोत्तर होती जा रही है; जिन के पास पद से सम्बन्धित आवश्यक अर्हता तो है, परन्तु, उस पद के अनुकूल विषयात्मक ज्ञान का अभाव है। इस ही कारण, सम्बन्धित पुस्तकों की भाषा में अस्पष्टता दृष्टिगोचर होती है और शिक्षकों की भाषा में भी और अधिक अस्पष्टता उत्पन्न होती जा रही है।

• **एकसमान पाठ्यक्रम का अभाव** – अल्टियस ब्लॉग में प्रकाशित लेख 'शिक्षा में समस्याएँ, 2011' के अनुसार – यह सत्य है कि सम्पूर्ण भारत विविधताओं से पूरित देश है तथा उन के भोजन, निवास, सामाजिक, सांस्कृतिक, रीतियों, प्रथाओं और आध्यात्मिक विचारधाराओं में भिन्नता है; जिन के आधार पर प्रादेशिक स्तर पर उन की अध्ययन सामग्री की भिन्नता विद्यमान है। इस के अतिरिक्त, प्रादेशिक और केन्द्रीय स्तर पर अनेक शैक्षणिक परिषद विद्यमान हैं; जिन में, अध्ययन सामग्री की अत्यधिक भिन्नताएँ विद्यमान हैं और मूल्यांकन तथा प्राप्तांकों के आवण्टन का आधार भी भिन्न है। पाया यह गया है कि मूल्यांकन के समय विद्यार्थियों को वास्तविक योग्यता के स्तर से अधिक अंकों का आवण्टन किया जाता है और यह आवण्टन अपने शैक्षणिक परिषद की योग्यता को उत्कृष्ट दिखाने और परिषद के स्थायित्व हेतु किया जाता है। वास्तव में, यह कृत्य विद्यार्थियों की शैक्षणिक गुणवत्ताप्राप्ति के आधार को खोखला कर रहा है।

• **योग्य शिक्षकों का अभाव** – इलेक्ट्रॉनिक बेव साइट' ''विकिपीडिया'' के अनुसार – अनेक बार अनेक कारणों से ऐसे शिक्षकों का चयन हो जाता है; जो, अर्हता तो रखते हैं, परन्तु, अध्यापन की योग्यता नहीं रखते हैं। ऐसे शिक्षक सदैव गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रसार में बाधक होते हैं।

• **वास्तविक मूल्यांकन** – इलेक्ट्रॉनिक बेव साइट' ''विकिपीडिया'' के अनुसार – शिक्षक प्राय: किसी निकटता, भाव, स्वार्थादि के कारण कुछ विद्यार्थियों की उत्तर पुस्तिकाओं का वास्तविक मूल्यांकन नहीं करते हैं; जिस के कारण विद्यार्थियों की 'सीखने की प्रवृत्ति' पर अवांछित प्रभाव पड़ता है।

• **विज्ञान और प्रौद्योगिकी को समझाने वाली शिक्षाप्रणाली का अभाव** – अल्टियस ब्लॉग में प्रकाशित लेख 'शिक्षा में समस्याएँ, 2011' के अनुसार – वर्तमान परिदृश्य में यह स्पष्ट है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी को समझाने वाली शिक्षाप्रणाली की नींव को स्तरानुसार प्राथमिक शिक्षा से प्रारम्भ नहीं किया गया है और जिस में प्राय: कलात्मक पक्ष का प्रभाव ही अधिक है तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित सामान्य तत्थ्यों का अभाव है। इस ही कारण, माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को एकाएक विज्ञान और प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित तत्थ्यों को समझने में कठिनाई होती है।

• **निजी शिक्षण संस्थानों के लिये विद्यार्थियों हेतु कठोर प्रावधान का अभाव** – इलेक्ट्रॉनिक बेव साइट' ''विकिपीडिया'' के अनुसार – निजी शिक्षण संस्थानों में बच्चों की प्रवेश-संख्या

और संस्थान की आय पर विशेष बल दिया जाता है; जिस के कारण, बच्चों को बच्चों से सम्बन्धित किसी भी शैक्षणिक समस्या पर प्राय: दण्डित नहीं किया जाता है। इस कारण बच्चों में उद्दण्डता इत्यादि जैसे अवगुणों के प्रादुर्भाव की सम्भावना बढ़ जाती है और शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

भारतीय विश्वविद्यालयों के शैक्षणिक स्तर का प्राथमिक और उच्चतर प्राथमिक शिक्षा से अन्त:सम्बन्ध -

उक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि विश्वविद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता प्राथमिक शिक्षा और उच्चतर प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर है। वास्तव में, विश्वविद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता उच्चतर प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर है; क्योंकि, उच्चतर प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों में जो 'बोध' उत्पन्न होता है, उस ही के आधार पर विश्वविद्यालयी स्तर के विद्यार्थियों में शिक्षा का बोध उत्पन्न होता है। इस ही प्रकार उच्चतर प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर है; क्योंकि, प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों में जो 'बोध' उत्पन्न होता है, उस ही के आधार पर उच्चतर प्राथमिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों में शिक्षा का बोध उत्पन्न होता है। अत:, स्पष्ट है कि विश्वविद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता क्रमश: प्राथमिक शिक्षा और उच्चतर प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर है और इस ही कारण भारतीय विश्वविद्यालयों के शैक्षणिक स्तर को सुधारने के लिये प्राथमिक और उच्चतर प्राथमिक शिक्षा में सुधार करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष - उक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि भारतीय विश्वविद्यालयों के शैक्षणिक स्तर का प्राथमिक और उच्चतर प्राथमिक शिक्षा से वास्तव में गूढ़ सम्बन्ध है; क्योंकि, प्राथमिक और उच्चतर प्राथमिक विद्यालयों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिरुचि जागृत करती और विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के वैश्विक मानकों की ओर का मार्ग प्रशस्त करती है। अत:, भारतीय विश्वविद्यालयों को वैश्विक स्तर पर लाने हेतु निम्नलिखित विषमताओं को दूर करना आवश्यक है -

1. भारतीय विश्वविद्यालयों के शैक्षणिक स्तर को सुधारने के लिये प्राथमिक और उच्चतर प्राथमिक शिक्षा में सुधार करने की आवश्यकता है।
2. सम्पूर्ण देश में एकसमान पाठ्यक्रम प्रभावी करके उचित संख्या में ऐसे शिक्षकों की नियुक्ति करनी चाहिये, जिस के, अध्यापन में तर्क हो।
3. भारत में प्राय: भाषा को ले कर विवाद उत्पन्न होता रहता है; ऐसी स्थिति में, सम्पूर्ण देश में एकसमान पाठ्यक्रम प्रभावी करते हुए प्रादेशिक भाषा को वरीयता देनी चाहिये।
4. अत:, उच्च शिक्षा में गुणवत्ता का लक्ष्य प्राप्त करने के लिये प्राथमिक स्तर से ही उत्तर पुस्तिकाओं का वास्तविक मूल्यांकन अनिवार्य करना चाहिये।
5. निर्धन बच्चों के लिये सरकारों द्वारा संचालित छात्रवृत्ति इतनी होनी चाहिये कि वे अपनी दैनिक शारीरिक और शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें।
6. शिक्षकों के अनावश्यक अवकाश पर प्रतिबन्ध होना चाहिये।
7. आधुनिक प्रविधियों को आवश्यक रूप से प्रभावी करना चाहिये।
8. ज्ञात होने और सिद्ध होने पर ऐसे शिक्षकों की नियुक्ति निरस्त करनी चाहिये, जो, 'अतिरिक्त शिक्षा' ;ज्नजपवदद्ध के लिये बच्चों को बाध्य करते हैं।
9. सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का दुरोपयोग और भेदभावपूर्ण नीतियों को निरुद्ध करने हेतु कठोर प्रावधान प्रभावी करना चाहिये।
10. विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिरुचि जागृत करने के लिये शिक्षकों और अविभावकों हेतु प्रेरणादायक कार्यक्रमों को संचार माध्यमों पर निरन्तर प्रचारित और प्रकाशित चाहिये।
11. पुस्तकालय, प्रयोगशाला और संसाधन के रखरखाव तथा विस्तार हेतु उचित धनराशि का निरन्तर आवण्टन करने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ :

1. डा॰ सुहास : अधिक मुद्दों और चुनौतियों के होने पर शिक्षा, आई॰एस॰एस॰एन॰- 2320-0073, 2013
2. सक्सेना, (श्रीमति) मीना : नगरीय परिवेश में कामगार बच्चों की समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन' (शोध-प्रबन्ध की रूपरेखा), समाजशास्त्र विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश
3. Lall, Marie : The Challenges for India's Education System,ASP BP 06è03, Chatham House,April 2005
4. अल्टियस ब्लॉग : शिक्षा में समस्याएँ, 2011
5. 'पढ़ने-लिखने की उम्र में बाल मजदूरी', दैनिक जागरण, मुरादाबाद सिटी संस्करण, जुलाई 10, 2018, पृष्ठ संख्या - 07
6. 'मदरसा छात्रों के खातों में पहुँचेगा वजीफा', दैनिक जागरण, मुरादाबाद सिटी संस्करण, जून 22, 2017, पृष्ठ संख्या - 09
7. 'टयूशन पढ़ाते पकड़ा गया सरकारी शिक्षक, क्लास में मिले 50 बच्चे', [Online Indore,August 01, 2015, 09:50:00 PM (IST)]

◆◆◆